OM-22 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/02/2021 5:07 PM Page 10

नटराज...नट की तरह हमको नचा रहे

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

एक बार एक नट, एक पतली रस्सी पर चल रहा था। और लोग तालियां बजा रहे थे। जैसे-जैसे वो आगे बढ़ रहा था, वैसे-वैसे तालियों की गड़गड़ाहट भी बढ़ती जा रही थी। सबका दिल बड़े ही जोश, उमंग-उत्साह में था। लेकिन सभी करामात के रूप में देख रहे थे कि और देखते-देखते एक समय ऐसा आया कि वो करतब पूरा हुआ और लोग मनोरंजन के रूप में तालियां बजाने लगे।

अब इसका दूसरा पक्ष देखते हैं कि वो जो नट था, उसने कहा कि आपको विश्वास है कि मैं दूसरी बार भी कर पाऊंगा, तो सबने कहा कि हमें पूरा विश्वास है आप दूसरी बार भी कर पायेंगे। इस बार उसने कहा भीड़ से कि क्या मुझे कोई एक बच्चा मिलेगा? तो सभी ने अपने बच्चे को दबोच लिया। और सबका विश्वास हिलने लगा। हम क्यों अपना बच्चा दें! तो कहता क्यों! अभी तो आप कह रहे थे कि आप कर पायेंगे! तो आप किस आधार से कह रहे थे कि आप कर पायेंगे! अगर वहाँ कोई अपना जाता है, जिससे हमारा मोह होता है, उसके लिए हम असहज क्यों हो जाते हैं! जीवन का यही सच है कि साक्षी होकर खेल देखने का जो आनंद है वो और कहीं नहीं है।

भक्ति में जो दर्शाया गया, उसकी व्याख्या कुछ इस तरह से की गई कि नटराज न सिर्फ शिव का स्वरूप और उनके सम्पूर्ण काल व स्थान को ही दर्शाता है, बल्कि ये बिना संशय स्थापित करता है कि ब्रह्माण्ड में स्थित सारा जीवन तथा उसकी गति तथा ब्रह्माण्ड से परे शून्य की निःशब्दता सबकुछ एक शिव में ही निहित है। इससे क्या सिद्ध होता है कि शिव निराकार परमात्मा ही सबकुछ है। आप अपने से भी देख सकते हैं जो शंकर की मूर्ति दिखाई जाती है वो सीमित अवस्था है व्यक्ति की। जो बंधन मुक्त होगा वो ही दुनिया को चला सकता है। तो शिव निराकार को ही यहाँ नटराज के रूप में दिखाया गया है।

शिव तांडव के दो स्वरूप दिखाये गये हैं। पहला, क्रोध का परिचायक, प्रलयंकारी रौद्र तांडव। दूसरा, आनंद प्रदान करने वाला आनंद तांडव। रौद्र तांडव करने वाले शिव को रूद्र कहते हैं और आनंद तांडव करने वाले शिव को नटराज कहते हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार शिव के आनंद तांडव से ही सृष्टि अस्तित्व में आती है तथा उनके रौद्र तांडव से सृष्टि का महापरिवर्तन(महाविनाश) हो जाता है।

उनके मुद्रा में चार भुजायें दिखाते हैं। जिसमें एक हाथ में उन्होंने डमरू पकड़ा हुआ है। डमरू की आवाज़ को वैसे ही सृजन का प्रतीक माना गया है। ऊपर की ओर उठे हुए उनके दूसरे हाथ में अग्नि है। यहाँ अग्नि विनाश का प्रतीक है। और जो ज्ञान कहता है कि ज्ञान और योग अर्थात् समझ और उसका प्रयोग अर्थात् विज्ञान की अग्नि, हमारी पुरानी जो संस्कारों रूपी सृष्टि है उसका विनाश करती है। क्योंकि सबके संस्कार पूर्णतया एक सृष्टि के रूप में ही हैं जिसका कोई ओर-छोर नहीं है, इसलिए वहाँ पर उन्होंने विनाश की स्थिति दिखाई। लेकिन साथ-साथ परमात्मा हमें पालना भी तो देते हैं ना, इसलिए उनका एक हाथ अभय या आशीष या पालना मुद्रा में उठा हुआ है जो हमारी बुराइयों से रक्षा करता है।

खेल को अगर खेल की तरह देखें तो ही खुश रह सकेंगे। और खेल को खेल की तरह देखना भी एक बहुत बड़ी कला है। तटस्था का भाव हमें किसी भी प्रकार के प्रभाव व प्रलोभन से मुक्त रखता है तभी हम हर पल, हर वक्त आनन्द की स्थिति को बनाये रख सकते हैं।

इसलिए कहा जाता है कि शिव स्थापना भी करते हैं और विनाश भी। उनका दूसरा दायां हाथ उनके उठे हुए पांव की ओर इंगित करता है। इसका अर्थ यही है कि शिव मोक्ष का मार्ग भी सुझाते हैं और अज्ञान का विनाश भी करते हैं। चित्र में चारों ओर उठ रही आग की लपटें इस ब्रह्माण्ड को दर्शाती हैं अर्थात् आग की लपट(काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य और भय) में आज पूरा ब्रह्माण्ड, पूरा विश्व जल रहा है। लेकिन इससे सुरक्षित कौन रहेगा, जो अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को जागृत कर लेगा। इसलिए उनके शरीर पर लहराते सर्प जागृति या बुराइयों और विकारों को जीतने का प्रतीक रूप में दिखाते हैं।

परमात्मा को हम नटराज कहते हैं, ऐसा माना जाता है कि वो इस धरती पर हम सभी को एक कठपुतली की भांति नचा रहे हैं। लेकिन क्या ये सत्य है? वो नचा रहे हैं और हम नाच रहे हैं! अगर वो नचायेगा तो कैसे नचायेगा, जैसा वो चाहेगा। लेकिन हम उसकी एक भी बात को आज के समय में मानकर चल रहे हैं? माना जैसा परमात्मा हमसे चाहते हैं, क्या हम उस बात को ऐसे ही करते हैं? वे तो चाहते हैं हमारे अंदर मूल्य हों, धारणायें हो, एक-दूसरे का सम्मान हो, खुद का सम्मान हो खुदा का सम्मान हो। लेकिन ऐसा कुछ नहीं है। बस हम कहते हैं कि वे हमें कठपुतली की तरह नचा रहे हैं, या हमारे कर्म हमें कठपुतली की तरह नचा रहे हैं, ये हमको बार-बार चेक करना है। हम दूसरों का खेल तो साक्षी होकर देख लेते, लेकिन अपने खेल को जिस दिन साक्षी होकर देखने लग जायेंगे, उस दिन हम नटराज को समझ पायेंगे।

जिस प्रकार नट किसी को, किसी अपने करतब दिखाने वाले को कितने दिन लगातार ट्रेनिंग देता है, उसे तैयार करता है, काम करता है और उससे काम कराता है, उसी प्रकार से परमात्मा भी हमें पिछले 84 वर्षों से सिखा रहे हैं खेल खेलना, खेल देखना। और जब क्षेत्र में हम उतरेंगे तो उस समय हम कैसे सबके साथ रहते हुए खेलेंगे, सबके बीच में किस तरह का हमारा प्रदर्शन होगा, ये हमें परमात्मा सिखाते हैं। अब भक्ति की अलग तरह की व्याख्या है कि नटराज को उन्होंने परमपुरुष के रूप में दिखा दिया। बीच-बीच में जब धरती पर अत्याचार, अनाचार, पापाचार बढ़ जाता है, तो उस समय परमात्मा का बहुत ही भयंकर रूप होता है। इसलिए कहते हैं शिव का डमरू डमडम बोले, अगम निगम के भेद खोले। अगम निगम का अर्थ है आगे क्या-क्या होने वाला है, और पूर्व में आपने क्या-क्या कर्म किये, उसका कारण क्या रहा, वो सिर्फ परमात्मा ही हमको साक्षी रूप से बता सकते हैं। क्योंकि हम तो पूरी तरह से कर्म में लिप्त होते हैं, हमें समझ नहीं आता क्या सही है और क्या गलत। तो उसी नटराज का अवतरण, जो निराकार है, राजयुक्त है, परमधाम निवासी है, बंधनमुक्त बनाने वाला है, सर्वेश्वर है, महेश्वर है, पाप कटेश्वर है, उन्हीं की महिमा है नटराज की महिमा। अब वे हमको उसी तरह से देखना चाहते हैं महाविनाश होने से पहले।

प्रश्न : मेरा नाम रक्षा है। मैं पच्चीस साल की हूँ। मैं हमेशा पॉज़िटिव और स्ट्रेस फ्री रहने की काफी कोशिश करती हूँ फिर भी नेगेटिव थॉट्स आ जाते हैं। मैं क्या करूँ कि मेरे माइंड में सिर्फ पॉज़िटिव थॉट्स आयें।

उत्तर : आपको प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर अवश्य जाना चाहिए। ताकि आप वहाँ योगाभ्यास कर सकें। और रोज़ जो हमारी वहाँ डेली, मुरली जिसे हम कहते हैं उसमें बहुत सुन्दर विचार हमें मिलते हैं। तो सुन्दर विचार ही तो हमारी नेगेटिविटी को खत्म करते हैं। साथ में आपको अपने घर में भी रोज़ एक बार अव्यक्त मुरली का अध्ययन करना चाहिए। और बाबा की अव्यक्त मुरली में से पहले देख कर लिखें, फिर पढ़कर जो याद आये वो लिखें, फिर सारी मुरली पढ़कर 10 लाइन में उसका सार लिखें। इस तरह से एक पेज डेली लिखना चाहिए। इससे आपकी मनोशक्ति बढ़ेगी। मनोशक्ति और ज्ञान की शक्ति आपको सदा के लिए पॉज़िटिव बना देगी।

प्रश्न : मैं सूरत से हूँ। मेरे पति ज्ञान में नही चलते, आपके बताये हुए प्रयोग मैं कर रही हूँ लेकिन अभी तक कोई रिज़ल्ट नहीं मिला है। कृपया उन्हें ज्ञान में चलाने के लिए कोई ठोस उपाय बतायें।

उत्तर : ये अगर किसी के हाथ में होता कि हम करा देते तो हम सबका करा देते। हरेक का एक परोपर टाइम है। हरेक ने जैसी-जैसी, जन्म-जन्म भक्ति की है उसके परिणामस्वरूप उनका प्रभु से मिलन होता है। हरेक के कर्मों की भी अपनी-अपनी कहानी है। लेकिन फिर भी आपकी उनके प्रति शुभ भावना है कि वो ज्ञान में आयें। तो हम साकाश तो दे ही सकते हैं। आप सवेरे 4 बजे उठकर 7 बार संकल्प करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और अपने पति को आत्मा देखकर संकल्प करें ये देवकुल की महान आत्मा है। फिर एक विज़न बनायें। हम दोनों डायरी लेकर ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर महावाक्य सुनने जा रहे हैं। दोनों वहाँ बैठकर योगाभ्यास कर रहे हैं। दोनों आनन्दित हो रहे हैं। इसके लिए तीन मास तक एक समय निधार्रित कर लेंगे। इसके लिए आपको परमात्मा की याद में भोजन बनाकर खिलाना है। भोजन बनाने से पहले शिव बाबा का आहवान करें। फिर मैं परमपवित्र आत्मा हूँ इसको याद करते हुए भोजन बनायें। और संकल्प करें कि इस पवित्र भोजन को खाने से ये आत्मा भी बाबा को पहचान ले। इस धरा पर आये हुए प्रभु को पहचानकर उनके पास पहुँचे। ऐसे सुन्दर संकल्प भी करें और उनके लिए रोज़ आधा घंटा मेडिटेशन भी करें। ताकि उनके मार्ग में जो भी बाधाएं हैं लाइन क्लीयर हो जाये।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरी बिटिया ध्यान-योग करने के बावजूद भी बारहवीं क्लास में फेल हो गई। इसलिए अब उसका परिमात्मा के ऊपर से उठ गया है। तो कृपया बतायें कि इनके साथ ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर : हरेक की बुद्धि का लेवल अपना है। योग अभ्यास से हमें मदद तो अवश्य मिलती है। अगर हम अच्छी मेहनत नहीं करेंगे और परमात्मा के आशीर्वाद पर ही जीते रहेंगे तो भी सही नहीं है। तो इसमें भगवान को तो दोष देकर अपने को निराश करना या उसको गाली देते रहना इसकी आवश्यकता नहीं है। फिर से आप हिम्मतपूर्वक अच्छी तैयारी करके साल तो गया ही लेकिन उससे आगे के लिए कुछ सीख लेना चाहिए। बाबा कहते हैं ना हिम्मते बच्चे मददे बाप। क्योंकि परमात्मा की याद हमारी एकाग्रता को बढ़ाती है। जिससे हमें पढ़ाई करने में सहज हो जाता है। यही परमात्मा की मदद है। लेकिन कई बार फेलियर होना भी हमें सदा के लिए सफलता के द्वार तक ले जाता है।

प्रश्न : मेरा नाम डिम्पल है। मेरा भाई बहुत शराब पीता है। मैं उसकी शराब छुड़ाना चाहती हूँ उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आपको क्या करना है सवेरे आपका भाई जब सोया हो यानी 5 बजे के लगभग हमें एक प्रयोग करना है। सवेरे 4 बजे उठकर 5 बजे तक योग करें। अब 5 बजे उसको गुड वायब्रेशन दें। उसे आत्मा देखें कि वो मस्तक के बीच चमकती हुई एक आत्मा है। फिर माइंड टू माइंड उससे बात करेंगे। फिर उसे बहुत अच्छे संकल्प दें तुम तो भगवान के बच्चे हो, तुम तो बहुत पवित्र आत्मा हो। तुम तो देवकुल के हो। तुम्हारा वंश देखो देवकुल सबसे महान। जिसके दर्शन करके ही लोग निष्पाप हो जाते हैं, निर्विकारी हो जाते हैं। तुम ऐसे कुल के हो। शराब बहुत गंदी चीज़ है। ये तो राक्षसी भोजन है। तुम्हें ये शोभा नहीं देता। तुम्हारा इससे स्वास्थ्य बिगड़ रहा है तुम इसे छोड़ दो। रोज़ सेम टाइम ऐसा 21 दिन करेंगे। तो उनका सबकॉन्शियस माइंड उसको रिसीव करेगा। जब मनुष्य सोया रहता है तो सबकॉन्शियस माइंड एक्टिव रहता है। और आप देखेंगे कि सात दिन के बाद ही उसमें चेंज आना शुरू हो जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com